

ॐ नमः ॥ वडः सत्वाय ॥ ॥ ॐ नमः लोकां नमः ॥ अथ ब्रह्म
 सिवुक्त्या विधनमाह ॥ ॥ कलभपूजा विधिस्तथा यथा
 माधवा ॥ पुतिमावाय महावाला ॥ ॐ श्रीगार्ग्य गुप्तादाय
 यथा गदासाधन पुकारललाय ॥ ॐ लोकपालवन्द्य
 ॐ नमः ॥ नरस्य मंगुल दगुलिकलसपुकाधनकोटी मंगुल
 पुजा ॥ ॥ जापेधन निनांजन मगरुतावाः सग्वनः स्वरावधुधः

ॐ नमः ॥

208

I

315
 Astanvi
 urata

ॐ क्रीपमसकायाय ॥ श्रीशुभाघपाषाणसंलुलतगात्रकस्य
पायं प्रतिष्ठ स्वाहा ॥ ॥ **स्वा न वाय** ॥ ॐ शुभाघपाषाणक
स्वनाय क्री स्वाहा ॥ ॐ क्री मूलाक विजय क्री स्वाहा ॥ ॐ मनि
पद्मं स्वाहा ॥ ॐ अमिताभाय स्वाहा ॥ ॐ शुभाघांकुक्षयः
स्वाहा ॥ ॐ गायत्रि स्वाहा ॥ ॐ एकटीमायाय स्वाहा ॥ ॐ सुध
नकमायाय स्वाहा ॥ ॐ शार्ङ्गावला कितस्वनाय स्वाहा ॥ ॐ

स्वस्वसत्यनाय स्वाहा ॥ ॐ हयग्रीवाय स्वाहा ॥ ॐ किताय
नाय स्वाहा ॥ ॐ अपना किताय स्वाहा ॥ ॐ मालसेत्यप्रमद
नाय स्वाहा ॥ ॐ वनदाय स्वाहा ॥ ॐ अकालमृत्युप्रसमना
य स्वाहा ॥ ॐ ऊयाय स्वाहा ॥ ॐ विऊयाय स्वाहा ॥ ॐ ऊय
विऊयाय स्वाहा ॥ ॐ अरयप्रदाय स्वाहा ॥ ॐ धनंदाय स्वा
हा ॥ ॐ वंशुधनाय स्वाहा ॥ **धनमधमं** ॥ ॐ पुत्रकवृक्षाय

स्वाहा॥ॐ सुवर्णपुता विरुनदि नराजाय तथगगायः
स्वाहा॥ॐ सिंहविकिंदिरुनराजाय तथगगाय स्वाहा॥ॐ
सुप्रतिष्ठिरुनराजाय तथगगाय स्वाहा॥ॐ निपूर्वस॥
ॐ समं नरवर्णगन श्रीकृष्णराजाय तथगगाय स्वाहा॥
ॐ विषयीनर तथगगाय स्वाहा॥ॐ श्रीरवीनर तथगगा
य स्वाहा॥ॐ विश्वरुव तथगगाय स्वाहा॥ॐ निदडिन

ॐ नमस्कृच्छंदाय तथगगाय स्वाहा॥ॐ नम कनकमूनि
तथगगाय स्वाहा॥ॐ नम कास्यप तथगगाय स्वाहा
ॐ नम भक्तमूनि तथगगाय स्वाहा॥ॐ निपडिमस॥
ॐ सुप्रतिष्ठिरुननामध्वयाय तथगगाय स्वाहा॥ॐ
समं कावतासं विरुन संगमसि य तथगगाय स्वाहा॥
ॐ ॐ दुकुरु धुं उ विरुन तथगगाय स्वाहा॥ॐ नरपुता

सखननाकाय गथागगायस्वाहा॥ **ॐ नितु नु य स॥** ॐ प
 यगनायस्वाहा॥ **ॐ न॥** धूपगनायस्वाहा॥ **नेम॥** ॐ दी
 पगनायस्वाहा॥ **वायु** ॐ गंधगनायस्वाहा॥ **ॐ ॐ**
 दायस्वाहा॥ ॐ ऊमायस्वाहा॥ ॐ वरुनायस्वाहा॥ ॐ क
 थनायस्वाहा॥ ॐ अग्नयस्वाहा॥ ॐ नेमयस्वाहा॥ ॐ
 वायव्ययस्वाहा॥ ॐ ॐ मानायस्वाहा॥ **॥ पूजायास्तु**

ॐ ॐ वधनमामिसकतं सवनं ४ पुनरधर्मपुत्रं च संघं
 च नमामि सवनं तथा ॥ संधं कं लुदगुषानतासदुसं पक्ष
 वनसमिगं सर्वद्विदधनमारयवलदं श्रीपाठाजा
 पाठमं वामनं हिकमं लुत्रचकमं दंदागमंपुस्तकं
 वंदहं यनमखनं कसिलसा लाकानुकंपामया॥ ॥
थनदवपूजा॥ ॥ धर्मवृत्तीकनपीकमांकधनयाउसं

खलंखलविय॥ ॐ खं दना हरे ॥ ॥ पथैः गद्यविय॥ ॐ न
द्राहडा ॥ पूजा ललक यक॥ धर्म दनक॥ गुनुमं लुलः
लंखलविय॥ विसर्जन॥ ॥ तमिसलंख पंचगव्य पंच
संगंधनं हाय॥ ॥ धन हर्मि साधन॥ ला॥ हातनं थिय
कं नय॥ ॐ गं खं लं हं ॥ आसानं थय॥ ॐ सर्वता थगता
सांक सर्वता थगतालय सर्वधर्मागनेनात्म्य दण

मं लुल मृगमं॥ १ ॥ सांक धर्मागसं हतं हान चर्या वि
साधकं समं कुरुत दकायायं लाखमं लुल मृगमं॥ २ ॥
सर्ववृत्तन संपूर्ण सर्ववृत्तल विवर्जित समं कुरुत दचिग
गुं मनामं लुल मृगमं॥ ३ ॥ सर्वसत्त्व हाचितं धुधपुकि
हि निर्मलं॥ समं कुरुत दवावायं धाखमं लुल सावथ्यः
मं लुल मध्व सदा दान नय॥ आकास सत्त्वाने धर्तिना

ॐ हाथहाकालपा ॐ नमः ॥ ॐ सप्तमं हनं तु मां वृद्धं श्रुत्य
स्वादिहं सक्तिं ॥ **धनं ३ स्वाधिति नमः ॥** ॥ **पादाद्य**
नमः ॥ ॐ वृद्धं मे लुल त गान काय पा आ च मनार्थ प्रतिष्ठ
स्वाहा ॥ **॥ स्नान वार्य ॥** ॐ श्रार्य वेना च नाय स्वाहा ॥
ॐ श्रु को या य स्वाहा ॥ ॐ त्र त्र सं त वा य स्वाहा ॥ ॐ श्रु मि ना
रा य स्वाहा ॥ ॐ श्रु मां य सि धि य स्वाहा ॥ ॐ श्रु च ना य स्वा

हा ॥ ॐ मा म की य स्वाहा ॥ ॐ पा द ना य स्वाहा ॥ ॐ श्रार्य
ना य स्वाहा ॥ **॥ पूजाः धुः चंदनः ऊं ऊं काः स्वा ॥**
नेव शः मरुः स्तुति ॥ ॐ वृद्धं मे लो क नाथं सप्त वन न मि
तं पात्र सं सा न धी नं धी नं गं ति कि अ न स क ल गु न नि धि
धर्म ना जा व क कृ कृ कृ मा हं ध का ले क लि क ल क ह लं
का म लं ता डि अं कि ॐ वंद सा क सि हं पत्र म पि मि ल सा स

नेवय

वकालं नमामि ॥ ऊअपुलिनं वूयाअ खअ गुपुलिथकयाअ
धानं ॥ थनदधनाखकन्य ॥ गगुगुनादसिगयं दडिनऊानू
संलुलं पृथिव्यापनिस्सप्य हक्कांऊलिकृत्वा गुननादसिगयं ॥
गगुकायां सिष्यपनिस्सप्य पृथिवीस ऊअगुपुलिनं वूयाअ ख
अगुपुलिथकयाअ हाथहाऊलयाअ गुनयाकअन्यवाना
अदधनाखकन्य ॥ ॥ णिख्यावाच साहंम्यव नामादसिग

हाय ॐ मां धलामपादाय यावदावाधि संलुनिखेदनात
वृधगच्छामि हगवंक महाकापूनीकं सर्वरू सर्वदर्शिनं स
र्वरुलहयातीतं महापुन्यं अरुयकायं निरुनयकायं धर्म
कायं सननंगच्छामि दिपदानां मंगं एवंदिनपिदिनपिअ
पायिकं साधकायमदात ॥ ॥ णिष्यंऊलसां गुनयाकं ॐ ना
पयात हनाथे हगुर् अिरुलसांथगुनामयाकं नंगथच्छल

पालस्यनं आदणविल अथ अगुलिवाला सं आनंरयानाडा
 ग्वलरधालसा बाधिविरुहानपदमलातलं पत्रमास्त्रव
 धरगवंकयाकं सनन डान्य गथिंम वृधरगवंकधालसाः
 महाकनूवक समसं स्पृक मस्यधयागुहंसदृ दक्कलयनास
 याक महापुत्रुष सुनांनरदयानां रुदयायमकं ऊपमा
 तयस अक धर्मसयी थथिअ वृधरगवंक याकं सनन डान्यः

५५५५५

समस मनुष्याया अगु अथ च्छलपालयानवापंवाव ४ नमस्का
 तयाय ॥ **अननिनेऊनवाय ॥** ॥ **लंखजाकिहायक ॥** ॥
 पिसातगवन अहंक संमस्कं बाधिविद्याचनन संपन्नसग
 गात्मक विदनेकून पुत्रवम्यसास्कादवानां व मनुष्यानां च वृध
 रगवान ठम वृधनलाय ०० दंपूष्यमं लुलनिर्यां न्यामि ॥
वलिलंखजाकिहायक ॥ ॥ **उनमावृधाय महाकनूलाहानर**

निकृत्तदद्याय पत्रमात्मसंमतात् नचिर्गय नैध्मादुकमर्क
य सत्त्वार्थद्वयकनकावील ॐदंवल्लिदिद्यगंधावसापत म
यत्तुःसर्वसत्त्वाधनूनायां संमयकं वाधो पुनिसुपयः॥
ॐश्राःसुगतवत्तु दुष्पहाःस्वाहा॥ ॐनिबुधसंलपुजा॥ ॥
तताधर्मसंलुलथियाअनय॥ ॐसांकधर्मागसत्ताX॥न
सत्कात्रयाय॥ थनपायादि॥ ॐधर्मसंलुलतगानकाय

पाशाचमनार्थपुनिकु स्वाहा॥ ॥स्वानवाय॥ ॐपुष्पापा
नमितायस्वाहा॥ ॐगंधयुहायस्वाहा॥ ॐदण्डरुम्यस्वेना
यस्वाहा॥ ॐसमाधिनाकायस्वाहा॥ ॐलंकावतानायस्वाहा
ॐधर्मपुद्गीकायस्वाहा॥ ॥पूजासंमि॥ ॐयासर्वदुःख
यानयत्पसमं सांक्षिनिधनावको यामार्गदुःखयाकुगदि
नकुतालोकाथसंपादिका सर्वाकालमियंवदंकिमूनयवि

स्वक्यासंगता तस्मै धर्मक वाधिसत्त्वगतिना वृधस्य सा
 कृतेनमः॥ **॥ धनदंष्ट्र नाखक न्य ॥** सांशू हं द सीता ॥ नय
 ॐ सांशूला मृपादाय ॥ यावदावाधिसंलु निखंद ना क ध
 म्मसर्नगका मि विनागनां प्रवत्तं एवं विन पिगि व पिउपा
 यिकं ॥ साधूर मदात ॥ **॥** हनाथ हगू वृत्तिः गथ्व वृत्तपाल
 स्यन आदंष्ट्र पसंत्त रुयाथ थनियादिन स थगू वृत्त

स आनं च या ना अ पयमस्व न धर्म या क सलु अ न्य
 गथिंद क प्रहापात्र मिता धाल साः समस्त नागभदि माया
 गालगा अ विष्ठा क नागध्व ख माह माया समस्त गालगा अ
 चानक थथिं क प्रहापात्र मिता या क सलु अ न्यः वा नं वा
 न ॐ नाप या यः॥ **॥ निर्या गत ॥** उधर्म कु सांरु गपच
 त्रिगता सा अ पायिकं पायिक पात्रनिकं नथ तस्मै धर्म

नवाय॥ ॐ दंपूषा मंलुलनिर्यातयामि॥ वलिवि॥ ॐ नम
पुष्पापात्रमिह महापित महापुत्र महानीलं नलपंकजं पुष्पा
दम् ॐ दंपूषा मंलुलनिर्यातयामि॥ वलिवि॥ ॐ नम
कलं मधुवर्धनी॥ धिप्रिश्वधवर्धनियस्वाहा॥ ॐ तिध मं
मंलुलपूजा॥ ॥ नमः संघमंलुलनिर्यातयामि॥ ॥ गमध
ॐ सर्वत्रु नसंपूर्णं सर्वत्रुलवर्धनं समनुदयविना

गं मनामंलुलमूरुमं॥ ॥ नमस्कायया॥ ॥ पादार्घ्यतया॥
ॐ नमः संघमंलुलनिर्यातयामि॥ ॥ नमः संघमंलुलनिर्यातयामि॥ ॥ नमः संघमंलुलनिर्यातयामि॥
नवाय॥ ॐ नमः संघमंलुलनिर्यातयामि॥ ॥ नमः संघमंलुलनिर्यातयामि॥ ॥ नमः संघमंलुलनिर्यातयामि॥
ॐ गगलगंजाय स्वाहा॥ ॐ समंलुलनिर्यातयामि॥ ॐ वरुणाय स्वाहा॥ ॐ सर्वनीवर्तविष्कर्त्रिय
स्वाहा॥ ॐ मंडूपाय स्वाहा॥ ॐ सर्वनीवर्तविष्कर्त्रिय
स्वाहा॥ ॐ कीर्तीगर्ताय स्वाहा॥ ॐ स्वर्गाय स्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ

ॐ नमः ॥ उं वृधं नमामि सततं वलपद्मपालि मेत्यात्मकं
गगलंगं ससंक्रुतं यकाधिपोपनहिका धृतसंक्रुधा
खं विष्कंतिनकिनिगद खगर्हपुलामामि हव्या ॥ ॥

दधनाखकन ॥ ॥ सांक्रुहं दसिताखयं ॥ ॐ सांवल
मुपादाय ॥ यावदावाधिमंलुनिषदनात् संघसत्रनंग
कामि गनानमयं नवंदिनपिनिचयिउपायिकं साधूर

कात्रसदात् ॥ ॥ हंगुत् ॥ तांक्रुचार्य थनियात्र्यापिन
सं गथ्यकुलपालस्यनं क्रुद्रापसंनरुयाथं थुगलिव
लासंनसंक्रुत्रंस्वयानाडा ज्वलतधालसा वाधिक्रानमला
तल तथगतयाचर्यापदमलातल संघसत्रनंग गथि
क्रुसंघः क्रुआर्यावलाकिस्वत्रधालसा समक्रुगलयाक्रुय
सचानक्रु ॐ स्वनरुयाडाविष्काकक्रु थथिंक्रुआर्याव

लाकि तस्वया कं सनं अन्य थूगुपका ननः वानं वानं ॐ ना
पयाय धक सिष्यं रुसां गुत्रुया कं प्रार्थना या ना गुत्रुनं रुल
सां धलं हा कलपूय धक सा धूधया पिं किमिस्थं रिं गु
ॐ का या त धक गुत्रुनं रुल सां आह्ला दय कलं ॥ **॥ नि**
य्या त न या य ॥ **॥** सं कि सं धे श्व ता प रि रु ल प रि पिं त्रा
सं कि सं धे ॥ सं कृ ता ग म रि रु लं प रि पिं त्र ग मः अ ना ग म रि

रु ल प रि पिं त्र ग मः अ हं क नु व र ग वा न आ य्या व रि क
वा धि स त्वः सं धे ॥ आव ह नी य प्रा व ह नी य स मा क न नी
य अ क लिक न नी यः अ न रु नः पुं ष्ठ क रु द र्श नी यं त
सं सं धे व त्रा य ॐ दं पु ष्ठ सं लु लं नि य्या त या मि ॥ **॥**
व लि वि य ॥ उं न मा ला क ना थ य ॥ द वा स न न य य ऊ ना ऊ सा
दि ति वं दि त पा द प म्ना य अ स्म ष मा न क स त्व उ धा न ल चिं ता

यत्पर्यन्तं महाकाव्यलिकाय ॐ दं वलि पंचामृतादिमहि
 गायः गृहं २ सर्वसत्त्वाश्च ननकादिदृष्टाः गायय २ उध्वय
 समध्वयस्य न वृधस्य न धर्मस्य न संघस्य न सत्यवा
 दिस्य न ॐ आर्द्राः ॥ १ ॥ ॐ मिश्रमसंलुलपूजाः
 ॐ तिसंघसंलुलपूजाः ॥ ॥ नतामलसंलुलथिसं नय ॥
 मथा ॥ ॐ सर्वसत्त्वं महाचिद् बुधपक्रित्तिनिर्मलं समं कुरु

द्वितीयं धारुमं लुल्लसत् ॥ ॥ नमस्तुभ्यं ॥ पाद
 धृत्य ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ घण्टालाक्षं स्वयं गानक
 त्वया आचमनाश्चैव निरुत्तमा ॥ ॥ स्नानवाय ॥ ॐ श्री
 घण्टालाक्षं स्वयं गानक ॥ ॐ गणेशाय नमः ॥
 स्वाहा ॥ ॐ मनिषं नमः ॥ ॐ मिताय नमः ॥
 ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ गानाय नमः ॥ ॐ रुक्मीनाय

यस्वाहा॥ॐ सुधनकुमाराय स्वाहा॥ॐ आर्यावलाकि तस्व
नाय स्वाहा॥ॐ खंखणाय स्वाहा॥ॐ हयगृवाय स्वा
हा॥ॐ ऊयाय स्वाहा॥ॐ विऊय स्वाहा॥ॐ ऊय विऊयाय स्वा
हा॥ॐ अरुय प्रदाय स्वाहा॥ॐ धर्नदाय स्वाहा॥ॐ वणुंध
नाय स्वाहा॥ ॥ **थुलिम मध्वस** ॥ॐ प्रयक वृधाय स्वाहा
ॐ सुवर्णप्रणखिट नाऊाय तथागताय नमस्वाहा॥ॐ सिंह

विकुंठिय तथागताय नमस्वाहा॥ॐ सुप्रगिष्ठिताऊाय
तथागताय नमस्वाहा॥ **ॐ तिपूर्वा** ॥ॐ समकनस्रगत
ग्रीकृटनाऊाय तथागताय नमस्वाहा॥ॐ विषणिन तथा
गताय नमस्वाहा॥ॐ श्रीशिवन तथागताय नमस्वाहा॥ॐ
विस्वरुव तथागताय नमस्वाहा॥ **ॐ तिदकि लस** ॥ ॥
ॐ ककुचंद तथागताय नमस्वाहा॥ॐ कनकसूनि तथाग

गायनमस्वाहा॥ॐ कात्यपतथाग गायनमस्वाहा॥ॐ सा
कमनितथाग गायनमस्वाहा॥**पुनः**॥ॐ स्यनिकुर्हि
लनामध्यायतथाग गायनमस्वाहा॥ॐ समंकावताम
विजितसगुमसिप्रतथाग गायनमस्वाहा॥ॐ ॐ दुक
दुधुं ऊकं दुधुं ऊकं तथाग गायनमस्वाहा॥ॐ न तपताम
स्वनतथाग गायनमस्वाहा॥**उक्तं**॥ पूषा गायनमस्वाहा

अग्नः॥ॐ धूपतायनमस्वाहा॥**नेम्य**॥ॐ द्वीपतायनम
स्वाहा॥**वायव्य**॥ॐ गेन्धतायनमस्वाहा॥**ॐ मान**॥ॐ ॐ
द्वीपस्वाहा॥ॐ यत्मायनमस्वाहा॥ॐ वननायनमस्वाहाः
ॐ कथनायनमस्वाहा॥ॐ अग्नयनमस्वाहा॥नेम्ययनम
स्वाहा॥ॐ वायव्ययनमस्वाहा॥ॐ ॐ ॐ नयनमस्वाहा॥
वक्तृपुष्पगिरिस्वाहा॥ ॥**पुगुमेनुलपूजायाय॥पूजाउधं**

गङ्गायाय ॥ किंवलकन्या ॥ उंलाक्षस्वप्रसिलसोक्तं अमाद्य
गुनसागत्रं अमिताताखितंमोदी नमामिहमाद्यपांषंतमा
म्यहं ॥ धनखकन्या ॥ ॐ मां यलामूपादाय यावदानाति
गमिन्नां ससूर्यादयात्सर्वपांलिवधत पयसादयनात्
पानात् वीनासनात् ॥ मालाकवर्तुक मृगगीत ललित
सनात् श्रवणचर्यात् गथावागुदात् नदाषडनात् ॥

उद्विगासनात् अशाहंविनत कनाम्यहंकावृत्तगुलेपय
तिःनीनामिषाववना वंशचारीहत्वा ॥ ॥ हनाथहगुन
गथाकलयायस्यनं आह्लादयकाश्च ॐ मां यलामूपा
दाय हाकलपुत्र थनियादीनसु धर्मपाकतय रुल
लाययात् ॥ यावदानातिगमिन्नां यावत्कालः ज्वलत्तप
विमानधालता चडिद्रिद्रिक्तः गीसूर्यउदयमश्रुतलः

भीमर्योउदयः संलि सांगिरुल थूलिकक वरुधनप्रप्यता
ल॥ सर्वपालिवध्वनः समस्तपालिदध्वनं सयांसध्वनदयमा
ल॥ यत्रस्वदनाः स्यावयाद्रव्यसंलारयायमम्यडाः॥
पानाः स्यापानत्वममगडा वीनशामनयायमम्य
डा॥ मालावर्कः कः नानात्रंग वित्रंग खानमालानंकाखाय
मम्यडा॥ नृयगी नवादिधयागुचगुर्यमूर्ता धयागुप्या

चिकं नयमयडा थनं अष्टदाष्टादिनं अष्टाविनत कवा
मिहं ॥ थचागायाकनं जायलप पायदकजिनं गालनं थकं
गुन्या अदनाडा ॥ गथागनप्रकाशनी थवंधनकुलसाळ
नापयानं ॥ ॥ शुधकंदगुवात्रहात्रसदृषी पधवयससि
नं सर्वद्विदधनमारुयवलं श्रीपाठकापागमं वा मना
रिखेमं शुचकमला दंथागमंपुस्तकं वंदहंपत्रमस्वनकु

सिलसालाकानूकं यामयं ॥ गथिं कलाकस्वप्रधालसा ॥
शुधं कंदगुवात्रहात्रसदृस ॥ अयंकदाहास्वानथं चापु
थिंगुवर्कुर्याविकाक ॥ पधवयससि नं ॥ पलस्वान
आसनया नाडाविकाक ॥ सर्वद्विदधनमारुयवलं ॥
असिगरुः सिलसरुसं विकाक ॥ अभाघपाठका नाडावि
का अरुयमदा वनदमदापाठका यमालाथउडागुप्य

कालाहागनं कना विष्णुनां वाभनारिक मंलुन चकमलं
दंशर मंपूक कं ॥ हनं खडा गुलाहागनं रुल कुधोपधया
गुपल स्वानं गिदं दः पृष्ठक ध्यपगो कना उ विष्णुनां ॥ ॥
वंदहं पंशं स्वनें रुसिलसा लाकानु कं पा मयं ॥ राकूलपू
थथि म्माद्यपाणलाक स्वने रुल सांदर्षया यधकः
गुनं रुल साशहादय कलं ॥ **थन वल्का मंलुल सतयक**

ॐ खलं खनं हाय ॥ ॐ खलुना यहं ॥ ॥ ॐ नमा अमाद्य
पाणलाक स्वनाय ॥ धर्म सूर्य पूर्वका मि वर्क धर्म ज्ञी ॥ ॥
थन अर्घयाय ॥ संखत आभ्यल सादद दकिना गुंतुति
यादाहाल स्वान ॥ पंचनल नया उवाक याय ॥ ॥ अ
य कायं काय ॥ ॥ ॐ सनर सिमिर कन शपन २हन २हा
नकी ज्ञी ॐ काय वं म्मा वम सनर धिपिर धनर गनर मनर

स्मि सहस्रपत्रिमंलितं श्रीपुत्रः ॥ १ ॥ रगवंत सामादि
त्यः ॥ ३ ॥ मं २ वनन कथन धनदमस्त्रि देवगलोचोचिरु
अथ वनदायकी स्वाहा ॥ ॥ **जापया कासयां जापयाच**
का ॥ **थया लिङा अकु गज्वल ११ दारुलन २१ थन मंलु**
लसकयका ॥ मंरु ॥ ॐ नमानतु तयाय ॐ नमधीश्वर्या
वलावला कीरुस्वनाय ॥ वाधिसत्वाय महासत्वाय महा

कात्रनिकाय नयथां ॥ ॐ अमायमिल महाशिल सधस
त्वः ॥ १ ॥ मंरु २ पमविह विरुतु अधन समंकावलाकि
नस्वनाय ॐ आः ॥ १ ॥ दस्वाहा ॥ ॥ **वनिविय ॥** ॐ नमा
लाकस्वनाय ॥ ॐ नमा अमायपाषाय गेलाकदप्यना
य ॥ महाकात्रनीकाय एकाग्रचिनाय ॥ सकलनाग दा
विदद्वस्वसह दूस्वतर्प्यन समगायः ॥ ॐ दं वलिदुगंधादिः

सहिगाय सुंऊं २ सांनिपुष्टिपुंऊं कृत्तुमउं आहं हं रुट्त्वा
 हा॥ ॥ पूजाधं मरुः गायः ऊं धर्मा वाद्यादि x पूजाविधि
 कृति॥ ॐ सुधं कंदगुवात्रहात्रसहसं पद्मवत्रससिंरं स
 र्वहविदधनमोहयवलंणीपाणजापात्रमं वामनाहि
 कसं पुत्रचकलादं द्यात्रमं पुस्तकं वंदहं पत्रमस्रवं कुः
 सिलसालोकानूकं पामय श्रीश्रमाद्यपाणलाक्षस्वन

आत्मानं राखय॥ ॥ लकूलपूत्र गथिं कृत्तुमस्रव
 श्रमाद्यपाणलाक्षस्वनधलसा शुधनिमलदाहलस्वा
 नथवर्तु गजपुकाषयादविष्काक पलस्वानया कं
 र्तिकायामध्वसं उत्पत्तिरुत्थाडाविष्काक लालपाडाश्र
 गाधनायानाडा ध्वनयाय आपयाय॥ पूजायाय॥ ॥
 ॐ पुष्पधूपदीपेष्वगंधमाल्याविल्यपनं चूर्णनेवशादि

रुलमलादिरिउपसंहाय पाठ्यतांस्वनादिवसुधक
नसुकमालादिरि सर्वास्वनादिध्वकनं॥ ॥ हाकुलपू
रु॥ थअसुमिवरयादुलंकन्यः काधकं गुनंरुसांश
ह्लादयकलं॥ कचिऊलंसंलुलंसंलुलंकनाटिवा का
पाठ्यमहानगत्र जायतुअय॥ पृष्ठाऊरुनाऊप
ठिपययमल महाहागरव प्राप्त्वकि॥ ग्वसमनूष्य

नंशर्यावलाकिरस्वत्रयाअगसध्वत्रमंलुलथिलः
थसुसुहिकंरुडाधननगत्रस रुडाधनहागलायडा
हनंसमनूष्यनं गायलअऊरुस्वानमंलुलसकाल
थसमनूष्यमहासुखहागलायडाधकधीवऊसत्वं
आह्लादयकलं॥ ॥ सिंधूलपूऊनंरिचकपूऊयद
वीगमथाहि॥ ॥ हाकुलपूग्वसमनूष्यनंधुगमथा

पदपाठाचरसिंधूलनं निचकाठापूजायाम् थस्मन्नूय
थथिगुरुललायुडा ॥ ॥ चंदनं सिंधूलं लपितं पंथं प्रवी
तं पापनाशनं आपदाहरकं नित्यं लक्ष्मीनिष्ठं सर्वदा
यस्मन्नूयनं धुविषाविश्रयानाठाचरसिंधूलनं पूजा
यानाठाहगतिरावयाम् थस्मन्नूय यामस्तपोपनाथ
इयूः आपदाधयागु आप्तधयागु ग्वद्यलसंदयिडाम

खलस्त्रिर्नसदां वासयायुडा ॥ ॥ मावतीमाधवीजाति
मादायचंपकादिति ०० यादिपुष्प संशुक्ति नाहनं पूष्य
माविकां ॥ वरुणीकृममं चयं कि सर्वदासुखदुलपुदं
विशार्थकामासदुलं चउत्तं संकानवृधिविपुनासंनं च
सुपुष्पसुखमाप्रवन्ति काटिपुमाहान कृमनाहनादुलं
ग्वस्मन्नूयनं जीत्वा पलत्वा उरुत्वा धंत्वा पापिजात

स्नान आदिच्छालथ मम मनस्य समस्तविद्याज्ञानसाक्षादि
मयूडा समस्तसिद्धिदयूडा॥ कामनायानागुलिसिद्धिरय
संक्रान्तदयूडा सकृदयूडा नृपहिनीडा अनकसूखता
गलायूडा॥ ॥पृष्ठायाडा अकुरु कृमापन ऊधर्मावा
गमश्चादिवंदनाकनाटि मनसागमथाय॥ ॥ग्वक्कमनूड
नं गाय अकुरु स्नान कृमापन ऊधर्मावागमथापदया

डा नमस्काययाग थक्कमनूष्यनं थथिगुरुललायूडा॥
अनाग्यं दहं विप्लवं च धर्म संक्रान्तवृद्धि विपुलायं च
विद्यार्थकाम सरुलंकुलश्चि श्रीश्रीमाद्यपाशननम
स्कुगाय॥ हाकलपुठ॥ ग्वक्कमनूष्यनं सदां शानाग्ययाना
डा ग्वक्कलसंवागमदयकाडा चानीडा पूर्वकन्यारुल धर्म
नंकदयूडा संक्रान्तवृद्धिरयूडा॥ सकृनायूडा विद्याज्ञा

नलायुडा समस्त संपत्ति थलितुल्लिखितं वासयायुडा का
 मनास रुचयुडा ग्वस्तुन वीशुभाद्यपाठदर्शनयाग
 थस्तुयाकल्याणवृद्धिरुयुडा ॥ पंचनखादि अर्थकृत्वा अत
 यागमथया ॥ उन्नमानं कृत्वाय नमो गवत आर्यावला
 किं सवनाय वृत्त्यादि धंउपगाकादि चामलघंठ सहिग
 न सुवर्कुरुगंवा आनाहन नरुलं प्राप्तामि सतसहस्रानि

५२५५५

उन्नमसहिपति चक्रवर्तिना जापदं पुनचतुखल्लिकुम्पा ॥
 हाकलपुत्र ग्वस्तुमनूष्यनं गमथायनपाडा पंचनखसहिमं
 नं अर्थयानाडा धंउपगाक चामलसहिगनं सुवर्कुरुगंवा
 अन्नकनलचक्रुवा वीशुआर्यावला किं सवनाय गचक्रुवाल
 थस्तुमनूष्यलकडि दइसां नाजाइयुडा ॥ ॥ नवशादिरु
 लमल गां सवनादिमुपधाखनाग ॥ उन्नमानव महागाग्धश्च

नसंप्राप्तवन्ति॥ ॥लोकलक्ष्मण गवः स्युः आर्यावलावलाकि
स्वयंयाग निसला अथवा नैवय रुलमूल गवयग्वल दहलपा
यापुन्यनं थः सनूय उरु मगुकुल सऊ नमऊ याडा महा
गीरुयूडा॥ ॥सगुनादि निवताधोक नाहले॥ सर्वकार्य स
हहलं॥ सरुलं धनसंकान॥ आयुल क्रिय सागनं शुभपदं
हने गवः सनूयनं सग्वन धलिनं तव कल थः सया समसुका

यस्य रूपं रुलं अनक धनसंकान दयूडा॥ आयुवृधिरुयूडाः
लक्ष्मीवृधिरुयूडा॥ समसुलाकनं उरुयूडा पद्मावृधिरुयू
डा॥ सरुमसु स्वस्तिवह॥ कलगावृधः ॐ न्यादि॥ ॥हने गव
ः सनूयनं स्वस्तिवाक्य पदपाडा गाय॥ अऊरु स्वान लाय
स्वयंयाग सिलसका स्यन मस्काप याग थः सनूय दूर्गमिडा
न्यम्बाल॥ सगुमिडा निडा रिंगुकुल सऊ नमकायडा लोकनं प

जासां दयायूडा ॥ ऊधपंदनि नमदिद्यसुगंधल्यपनगभवा
पूर्वनि विद्यार्थकामवस्य वाक्कृपगिवलाक आनांघदहं सु
पुण्युकं सुखमापूर्वनि माकुगमिप्राप्यदिविदवलाकवस
नि ॥ ॥ राकुलपुगु ग्वक्कमनूयनं लाक्षस्त्रयाकंधूपथन
थक्कयासुगंधसत्रीनश्यूडा विद्यावनकश्यूडा धनाश्रय
कामनासुखलंश्यूडा नाजायावचनथं सकलवस्यश्यू

आनांघश्यूडा सुपुण्युजागश्यूडा सदां सुखिश्यूडा थनंलि
माकुगमिडानीडा ॥ ॥ दीयायेसर्वध्माकां नंदीपठानाग
मपुणं धाकयामिपुसंसाकं सर्वहूतं प्रसिधय ॥ ग्वनसख
वमिपुगु सिधार्थं गेलमवुगं लआर्यपन्नठालिगे उरुसंपं
चदीपकं ॥ ॥ राकुलपुगु वीकाचिकनंथशुल हामचि
कनंथशुल पकाचिकनंथशुल पुचिकनथशुल धलचि

कनथउ लज्वझस्यनंसगछायकल गथिंमुसंधालसा
समसुं धकालनासयाक सूर्ययाकिर्ल थंजाठल्य
मान थथिगदीपदानग्वझस्यनंलाक्खनयागमगविल
थगुलिदीपदानयानायापुंनंनंसससुपापनासइयू
अयकनूपसुंदंतीइयूअ अविनासिपदमलायूअ॥
आत्मासुधइयूअ॥ हनं उऊनाऊ सगंधर्वकिंनअस

न चोयव्यायुअपस्मावआदिनंरयनासइयूअ हनंक
सुकपापनासइयूअ अदिकपापनाग सइनासइयू
हृत्पुतपिसावेसांकइयाअ मतिगुकुगहसांकइयूअ
धनधंन्यसंपतिवधइयूअ हनंथनंलि नागसांकऊना
आथयाताव विपतिमदयिअ उन्मांकनमंगलइया
अ नाजायापदलायूअ थनंलि अविनासिमाऊपदला

यूडा॥ वृत्तिदियदानरुल॥ ॥ दडिनासुवर्कुन्यन्याय
पयकुतित्रिमकापिवोयथा शुधसधचिहुमानसा
वहनांवहुरुलंपाफलंकिंविगान सुवर्कुलं॥ अमि
धविमनदान सुखसपुनलत्यय सुधसमने सदान
सर्वलक्ष्मीविसात्रपदलत्यत॥ ॥ शाकुलपुरु ग्वक्रम
नूकनं सुवर्कुन्यलडाह दडिनाछायाया अनुसात्रं॥

रुललायूडा शुधवधयडलसापुन्यनंवधयडयूडाः
असधनंदानयागसा रुललायमदू शुधसमनंदा
नयागसा समरुलक्षिपनिर्पुरुडयूडा॥ । सुगिम्हा
उंकुनंयन संगलसत्यथकिलः अनुयागथया किलला
कध्वत्रयथापिच॥ । शुक्रमनुष्यनं श्रीशार्प्यावलाकि
नस्यत्रयाक गोगयायूडा थक्रमसदानं संगलडयू॥ ॥

ॐ नमो लोकांशाय ॥ वाधिसत्वाय महासत्वाय ४ महाका
नूनीकाय ॥ हं कूलपूगधक श्रीवज्रसत्वं समस्तसहादय
काडाश्राद्धादयकलं ॥ ॥ पुनसाकूलपूग ध्वजसिबुन
नयाप्रहचसमहासर्व ॥ गुरुकमानीसाधनं कृत्वा वृत्तमा
चनं कुर्यात् ॥ हाकूलपूग ध्वनं लिबुगयानजनदिसेवहल
पंचयक ध्वजवृत्तकाचयकध्वसं लि कृमात्रिपूजायानाडा

वृत्तमाचन नारुन्या ॥ ॥ एवंविधीनां कृत्वा यन अष्टसिबुन
गागमं ॥ मत्थलाकसूखंरुत्वा अंकस्वर्गचक्रायनं ॥ ॥
हाकूलपूग ध्वनं विधानं ग्वजस्यन अष्टसिबुन मत्थमं
लसमस्तसहादयकाडा श्रीवज्रसत्वं आश्राद्धादयकलं ॥ ॥
ध्वयां लिडादवपूजाकाय ॥ ध्यानपूजा ॥ ॥ महावल्लिपू
जा ॥ स्वाद्वगमथा ॥ ॥ ॐ नमो श्रीवज्रसत्वाय ॥ ऊयाचवि

ऊयाचेव अति नात्रपयातिगा रदुकालीमहाकालीसू
लगावीसुआगिनी॥ १ ॥ ॐ दिचंदिधात्रदृष्टी लवंकिमि
ददस्वत्रीः कावातिनीपिचापिन्यां ग्रामावास्ति तथागिनी २
धात्रपुषामहापुषा दृष्टपुषाकृपालिनी॥ कपालमालिन्यां
खलांगयमहद्विका॥ ३ ॥ खज्राहस्तापुशुहस्ता वज्रहस्ता
धनुरगथा॥ पंचदाकिनीमहागत्व सर्वकर्मानुसाधिका॥ ४

आगमंजुलंमहात्रागि वज्रस्वत्रीपुहस्तथा तथागममहा
काय नीत्रंजनलाकण्टिका॥ ५ ॥ ॐ देवजस्वत्रीआवा
हनविश्वरवा॥ ॐ कश्कहनश्चं वश्चदनश्चस्वःस्वचदनश्च
उग्रश्चाटयश्चाऊमानस्यः सांकिक्वःपुष्टिक्व महाव
लिः ४ गृहं २ हं रुद्रस्वाहा॥ ॥ **थनचाकपुजा॥ दिगुलि**
बलि॥ नहस्पमंजुलदनक॥ सांकिजन॥ ॥ गुरुपूजादकिना

क्रमापन वनकालकाय ॥ ॥ ॐ नमो गवतः क्रमाद्यपा
 ७१ लाक स्वनायः धर्मसूतं पवतामि वत धर्मिणी ॥ यनक
 लक्ष्मिष्यक ॥ आर्तिवाटः सिद्धला ॥ चतुर्मे सगवता ॥ वनका
 खानदिय ॥ ॥ कलसातिष्यकदिय मंलुललकाय ॥ ॐ
 मिश्रमिवुनसमाकं ॥ कलवायकथं थथ ॥ पूर्वसंस्कृ
 दडिलसूयस्वा पडिमसत्रकपन्न ॐ नमः कंधान मध्वस

स्वरपन्न अग्नसपूरक नमश्चमस्वरपन्न ॥ वायुवासा
 लगनह ॐ नमः सत्रकपन्न थगिकलसवायगु ॥ ॐ
 उपासनवात्रयापालनयायगु ॥ थिलास गवमयपालं ॥ ॥
 पोषः गवमूत्र ॥ ॥ माद्यः साइद ॥ ॥ रुगनो कसि ॥ ॥
 वेतः साख ॥ धा ॥ ॥ वेसाख ॥ हास ॥ ॥ ऊरु ॥ रूलरूल ॥
 साखाध ॥ वा ॥ ॥ भवला ॥ अंभ ॥ ॥ राडवा ॥ दुमि ॥ ॥

आसूनधल ॥ ॥ कार्तिक ॥ तुलसिलंख ॥ धूमिभूमि

गया ॥ ॐ अमोघपरीसधराजायतथाग

तोयाहंत्यसंम्यकासंवृष्टायतजपध

सोद्ययराचसोद्ययरसमंतैतधारा

सधस्वत्वमस्तोमोहारा ॥ ॥ गवमत्रगवमयध्या

ह ॥ दक्षिसापिकसौदेक नादीध्वंयचगव्यच

प्रपित्तकापनासने पूज्यतिथ्यवागमति अमोगफलाय
यनी

गमकं रा

पाफोस्वा ॥ तक्षकनागा ॥ सिक्काधूप ॥ दक्षिमानिकं प्रज्ञापाध

दानम्या ॥ चाकु ॥ गुहासातत्रिधा ॥ वागमतिमारदायनि

धारपतिस्वा ॥ स्वमभिरिवनाग ॥ धूप ॥ कृशहा ॥ सारव ॥ संख ॥ गंधवि

दान ॥ कल ॥ ध्ये ॥ संखमो न

वागमति रोहिनि ॥ रुद्रधाला ॥ नाग संखजाल लज्जिध्वरस्या

धूपगुग्गुधवाल वर पियंगु दान कयगु भुयुहा मोर

राज धतिल ॥ लाभापविता जाध दहधुमि

का वागमति राजमयि देता धिताचा स्वरुप राग

५६ प श्रीरवशाद कति वरि समाधिराज्ञापाथ
 पक्षिराग निल पान आख्यो नंका x मनोहरत्रिथ
 फुरिखे केशा विमलावति नखा कूरिक शाग कक्षुर
 धूप भोग कूंकुक्क दक्षिराग कतकेतन पाथ लंका
 मुदिकाप ॥ ॥ विद्यासको निमल x पत्तार
 केशावति भुनदि कर्नविर स्वी त्रिथ परार शागराज
 नखा धूप भोग पोकिजाकि दक्षिराग भिरवक्क
 पाथ सधम्मपुंदरिका पान तद्यो पंचामृत

७ अंग वक्ष x निधानत्रिथ ॥ कंगु ॥
 केशावति सुर्वशावति अजिस्वा शांद उवशांद शाग
 धूपसिल्ला वरि शादुदु दक्षिराग निर तक्षगुत्तपाथ
 पान कूल माद्यो तद्यो x ॥ ज्ञानत्रिथ ॥ कंदरु
 केशावति पापनासनी तुमु गुंतु वारशुकि शाग
 धूप गुंतु वरि द्ये दशाभले पाथ ललीत्रिवितर
 पान मास ओह ॥ चित्तमनीत्रिथ ॥ त्रयुवाहान
 वाग्मति केसामति पंचामृत वरुन शाग
 धूप भिरवंद वरि पोकिजाकि - दक्षिराग हेश